यीशु के मनुष्य होने का चरम: उसकी मृत्यु एवं पुनरुत्थान

यीशु के मनुष्य होने का चरम क्या था? हम सुझाव दे चुके हैं कि ''पूर्णतया मनुष्य'' होने के यीशु के दो सबसे बड़े उदाहरण उसका प्रार्थना भरा जीवन और कलवरी पर उसकी मृत्यु थे। यह इसलिए कहा गया है क्योंकि प्रार्थना उस नाम और गम्भीरता के साथ जिससे हम मृत्यु को देखते हैं, मनुष्य की निर्भरता व निर्बलता का प्रमाण है। प्रार्थना में हम उसकी इच्छा चाहते हैं जिस पर हम निर्भर हैं, मृत्यु में हम उसमें जीवन का पूर्वानुमान लगाते हैं, जिससे मृत्यु आती है।

पवित्र शास्त्र में हम यीशु को प्रार्थना करते और क्रूस पर मरते हुए देखते हैं। ये अनुभव यीशु के सचमुच मनुष्य होने की कायल करने वाली अभिव्यक्तियों में हैं। क्रूस से ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' (मरकुस 15:34) पुकारकर वह हमें प्रार्थना करना सिखाने के अवसर का लाभ नहीं उठा रहा था। वह भावनात्मक वेदना और शारीरिक कष्ट को इतनी गहराई से पुकार रहा था कि आप और मैं इसे समझ नहीं सकते हैं। हम इसे इसलिए नहीं समझ सकते क्योंकि हम कभी वहां थे ही नहीं, न कभी होंगे और न ही हो सकते हैं। हम कभी सृष्टिकर्त्ता नहीं बने जो स्वयं एक सृष्टि बन गया था। हम कभी परमेश्वर नहीं थे जिसने अपने आपको उस महिमा से खाली करके एक मनुष्य का रूप धर लिया था। आप और मैं भक्तिपूर्ण जीवन बिताते हैं और कष्टपूर्ण मृत्यु पाते हैं; परन्तु हम कभी भी पाप रहित जीवन नहीं बिताएंगे और हम कभी भी अपने आपको सिद्ध बलिदानों के रूप में भेंट नहीं करेंगे। कभी किसी को यीशु की तरह अकेलेपन और बाहर निकाले हुए के संताप में क्रूस पर लटकाया नहीं जाएगा।

न केवल यीशु ने पूरी तरह से अतुलनीय आदर्श जीवन बिताया (इब्रानियों 4:15; 1 पतरस 2:22), बल्कि वह सबसे तिरस्कृत मौत भी मरा जैसे कोई नहीं मरा है (2 कुरिन्थियों 5:21)। यीशु को अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक मनुष्य के रूप में जीने के सबसे ऊंचे और मरने के सबसे अन्तिम अनुभव को सहना पड़ा था। वह पृथ्वी पर केवल हमारे लिए नमूना छोड़ने के लिए और (1 पतरस 2:21) न ही वह *केवल* जीवन के

वचन बिताने के लिए पृथ्वी पर आया था (यूहन्ना 6:63)। यीशु ने स्वयं कहा था, ''परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए'' (यूहन्ना 3:17)।

उसके मिशन के लिए जन्म लेने, जीवन बिताने और मरने से कहीं अधिक आवश्यकता थी। उसके मिशन को पूरा करने के लिए उसका जन्म *विलक्षण,* उसका जीवन *निर्दोष,* और मृत्यु बहुत ही *वास्तविक* होनी थी। पृथ्वी पर अपने जीवन के सभी पहलुओं में यीशु ने पृथ्वी पर रहने वाले किसी भी मनुष्य से ऊपर मानवीय स्वभाव को दिखाया था। वह सिद्ध था, इसलिए नहीं कि वह ''आधा-परमेश्वर'' था बल्कि इसलिए क्योंकि वह सचमुच मनुष्य था और बिना किसी कलंक या दोष के रहा था। मानव इतिहास में केवल यीशु ही एकमात्र ऐसा उदाहरण था जिसने न केवल उत्तम जीवन बिताया बल्कि जन्म से लेकर मृत्यु तक पाप रहित रहा।

उसकी मृत्यु

विलक्षण रूप से पवित्र और शान्ति में यीशु खोए हुओं के उद्धार का अपना उद्देश्य कैसे पूरा कर पाया था। यह गतसमनी की पहेली थी। उसने चाहा था कि उसके पिता की इच्छा पूरी हो: ''क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है। जिसने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया'' (1 तीमुथियुस 2:5, 6क)। यीशु ने कहा था, ''क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया, कि उस की सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे'' (मरकुस 10:45)।

इतने पवित्र और प्रिय व्यक्ति का बलिदान होना और इतनी भयावह, उग्र मृत्यु होनी क्यों आवश्यक थी? परमेश्वर की उच्च पवित्रता के कारण। उसकी अपरिवर्तनीयता और निरपेक्ष न्याय के कारण। उसकी पवित्रता पाप से घृणा करती है; उसका न्याय मांग करता है कि प्रत्येक पाप का दण्ड दिया जाए। उसमें कोई सुराख नहीं है। परमेश्वर किसी कृपालु माता-पिता की तरह नहीं है जो प्रेम और सहनशीलता के सिद्धांत पर अपने बच्चों के दुष्कर्मों को अनदेखा कर दे। इसके विपरीत, हमें बताया गया है कि परमेश्वर की ओर से प्राचीन काल से ही ''हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदला मिला'' (इब्रानियों 2:2ख); और ''मूसा की व्यवस्था का न माननेवाला दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार डाला जाता है'' (इब्रानियों 10:28)। नये नियम में हमें बताया गया है, कि ''मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है'' (इब्रानियों 9:27)। पाप बहुत ही गम्भीर बात है अर्थात क्षमा न किया जाए तो यह विनाशक है।

हमारे पापों के लिए पूर्णता पवित्र परमेश्वर द्वारा न्याय की मांग को पूरा करने के लिए निर्दोष मसीह के *सिद्ध* बलिदान से कम बात नहीं बन सकती थी। इसलिए, परमेश्वर के पुत्र ने जिसने अपने आपको पूरी तरह से परमेश्वर अर्थात अपने पिता की इच्छा के आगे सौंप दिया, छुटकारे का दाम चुकाया था। उसकी देह तथा लहू (जिसमें उसका प्राण था) ने

इतना बड़ा बलिदान उपलब्ध करवाया कि न्याय की परमेश्वर की सारी शर्तें पूरी हो गईं। इससे पिता उन्हें जो इस दान को स्वीकार करते हैं, क्षमा करके अपने पूर्ण अस्तित्व के साथ बना रहता है। "*दया न्याय पर जयवन्त होती है*"(याकूब 2:13ख) !

मृत्यु के समय यीशु ने कहा था, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं"; "पूरा हुआ"; "हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं" (लूका 23:34; यूहन्ना 19:30; लूका 23:46)। "*पूरा हुआ!*" शायद मनुष्य के लिए इन शब्दों के महत्व को पूरी तरह से समझना असम्भव है। परन्तु, यीशु जानता था; और मृत्यु की उस भयानक पीड़ा के बावजूद जो उसने सही, वह शांति से मर गया। अभी अपने पिता के घर की यात्रा शेष थी, जो उधार की कब्र से उसके पुनरुत्थान से आरम्भ होती है। उसकी मनुष्यता इसकी सीमाओं तक ही थी। उसका जन्म भी चमत्कारी था (लूका 2:6, 7, 13, 14)। उसका जीवन बिल्कुल पवित्र था। इसके विपरीत, उसकी मृत्यु उसकी विजय थी। वह पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए आया था (यूहन्ना 6:38), और उसने इसे पूरा कर दिया था!

उसका पुनरुत्थान

यीशु का पुनरुत्थान उसका समर्थन था और यह पुनरुत्थान बहुत ही शानदार था! किसी कान ने सुना नहीं, किसी हाथ ने उसे छुआ नहीं, किसी आंख ने उसे देखा नहीं, और किसी दिमाग ने उसे समझा नहीं होगा, परन्तु यीशु जीवितों की धरती पर लौट आया था।

अपने पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के अन्तराल में, वह सैकड़ों लोगों द्वारा देखा गया था (1 कुरिन्थियों 15:1–8)। अपने पुनरुत्थान के बाद यीशु का बहुत बार दिखाई देना मानवीय दृष्टिकोण से अजीब बात थी। कुछ उदाहरणों पर ध्यान दें। मरियम मरदलीनी रविवार प्रात: दिन निकलने से पहले ही उस स्थान पर गई जहां यीशु को गाड़ा गया था। जब उसने खाली कब्र देखी, तो उसे लगा कि यीशु की देह को कहीं और रख दिया गया है। जब वह रो रही थी, तो यीशु ने दर्शन देकर उससे बात की थी। उसने कहा, "मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उन से कह दे कि मैं अपने पिता और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं" (पढ़िए यूहन्ना 20:1–18)। स्त्रियों की एक टोली द्वारा ग्यारह प्रेरितों को बताने पर कि यीशु जी उठा है, "उनकी बातें उन्हें कहानी सी समझ पड़ीं, और उन्होंने उनकी प्रतीति न की" (पढ़िए लूका 24:6–11)। बाद में जब पतरस ने खाली कब्र देखी तो वह भी, "जो हुआ था, उस से अचम्भा करता हुआ, अपने घर चला गया" (लूका 24:12)। बाद में उसी दिन, दो लोगों ने यीशु के साथ भोजन किया। उन्होंने पहले तो उसे पहचाना नहीं; परन्तु जैसे ही उन्होंने उसे पहचाना वह अलोप हो गया (लूका 24:13–31)। उसके थोड़ी देर बार, यरूशलेम में, यीशु उन्हें दिखाई दिया जो प्रेरितों के साथ इकट्ठे थे। "वे घबरा गए, और डर गए, और समझे, कि हम किसी भूत को देखते हैं।" उसने उन्हें अपने हाथों और पांवों में क्रूस के दाग़ यह दिखाते हुए कि वह मांस और लहू था उन्हें आश्वासन दिया कि वह कोई भूत नहीं है

(लूका 24:36–43)।

एक सप्ताह बाद यीशु ने ताला लगे बन्द कमरे में अपने सभी प्रेरितों को दर्शन दिया था। पहले जब यीशु ने उन्हें दर्शन दिया था तो थोमा उनके साथ नहीं था। उसने यीशु के पुनरुत्थान पर अविश्वास जताया था। परन्तु अब वह उनके साथ था। यीशु ने उससे कहा: ''अपनी उंगली यहां लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।'' थोमा ने उससे कहा, ''*हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर*''(यूहन्ना 20:27, 28)!

जब यीशु ने गलील में ग्यारह प्रेरितों को दर्शन देकर उन्हें ग्रेट कमीशन दिया था, तो ''उन्होंने ... उसे प्रणाम किया, पर किसी किसी को संदेह हुआ'' (मत्ती 28:16, 17)। लूका रचित सुसमाचार में हम पढ़ते हैं कि पुनरुत्थान के बाद यीशु चालीस दिनों तक प्रेरितों को दिखाई देता रहा था। प्रेरितों 1:3 के अनुसार बहुत से पक्के प्रमाणों के साथ उसने दिखाया कि वह जीवित है। अन्त में, वह उन्हें बैतनिय्याह के निकट जैतून के पहाड़ पर ले गया और वहां से स्वर्ग में ऊपर उठा लिया गया था (लूका 24:51)।

हमने क्यों कहा है कि इन में से बहुत सी घटनाएं अजीब थीं? क्या ये अजीब इसलिए थीं क्योंकि चेलों को यीशु के जी उठने की बात स्वीकार करने में कठिनाई हो रही थी? स्पष्टत: बहुत से चेलों के लिए यह मानना कठिन हो रहा था, परन्तु यह अनापेक्षित नहीं है। धर्मशास्त्र, डॉक्ट्रीन के रूप में पुनरुत्थान पर विचार करना आसान लग सकता है, परन्तु एक वास्तविक घटना के रूप में इसे स्वीकार करना आसान नहीं है। पुनरुत्थान में अधोलोक का आयाम शामिल है जिसे हम किसी व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर नहीं जोड़ सकते हैं। क्या यह अजीब बात थी कि यीशु के कुछ चेले उसके दिखाई देने से डर गए थे? कदापि नहीं। किसी ऐसे व्यक्ति को जिसे आपने कुछ दिन पहले क्रूस पर चढ़े और गाड़े जाते देखा हो फिर से अपनी आंखों के सामने खड़े देखने के दृश्य के परिणाम पर विचार कीजिए। यदि आपको पूरा विश्वास हो जाए कि जीवित व्यक्ति वही है जिसे आपने मृत और गाड़े जाते देखा था, तो आपको निश्चय ही ''किसी दूसरे संसार'' के वातावरण का अहसास होगा। आपको मालूम होगा कि यह व्यक्ति ''मृत्यु लोक से वापस आ गया'' है। आप जानते होंगे कि कुछ अजीब घटना हुई है।

यीशु के पुनरुत्थान और उसके बाद दिखाई देने का भंवर असामान्य था। प्रेरितों ने इसे अपनी विभिन्न प्रतिक्रियाओं से दिखाया था। यीशु ने भी अपनी बातों, हाव–भाव और दिखाई देने से इस वातावरण में योगदान दिया था। अपने पुनरुत्थान के बाद उसने कहा, ''मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया'' (यूहन्ना 20:17)। यूहन्ना के विषय में उसने पतरस से कहा, ''यदि मैं चाहूं कि यह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इस से क्या?'' (यूहन्ना 21:23ख)। उसका दिखाई देना प्राय: असाधारण परिस्थितियों में होता था। इससे पहले यीशु बन्द कमरे या ताला लगे दरवाज़ों के भीतर न तो कभी प्रकट हुआ था और न ही अलोप हुआ था। कई बार उसे पहचानना कठिन होता था। घटनाओं ने अजीब मोड़ ले लिया था।

यीशु का पृथ्वी पर अस्थाई प्रवास पूरा हो गया था। कितनी शानदार घटना थी! कितना अद्‌भुत जीवन था! कितना अद्‌भुत उद्धारकर्त्ता था! क्या आपने कभी परमेश्वर की युक्ति पर विचार किया है ? परमेश्वर, जो सर्वव्यापी है किस प्रकार ''संसार में कभी-कभी आकर,'' कुछ ''समय'' यहां बिताए और अनन्तकाल में लौट जाए जिसमें वह रहता है ? अपनी सृष्टि का संतुलन बिगाड़े बिना वह ऐसा कैसे कर सकता था ? वह अपनी असीमित शक्ति कैसे ''रख'' सकता था जिससे हमारी आकाशगंगा में गड़बड़ न हो और पृथ्वी पर उथल-पुथल और विनाश न हो ? उत्तर यीशु मसीह में मिलता है, क्योंकि ''परमेश्वर मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर'' (2 कुरिन्थियों 5:19क) रहा था।

यह विचार करने पर कि यह महान काम कैसे पूर्ण हुआ, हमें ध्यान आता है कि मसीह के जीवन में दो बड़े पारगमन स्पष्ट हैं। पहला परिवर्तन परमेश्वर से मनुष्य पर ज़ोर देना था। नवजात यीशु स्वर्गदूतों के स्तुतिगान के शोर में आया, परन्तु वह एक चरनी में कपड़े में लिपटा हुआ पड़ा था। वह कुंवारी का पुत्र था, परन्तु उसे यूसुफ का पुत्र समझा गया था।[1] जीवन भर उसे यूसुफ का पुत्र ही समझा जाता रहा था। परमेश्वर एक मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ था। देहधारी होना वास्तविक था। पौलुस ने लिखा है:

> जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली (फिलिप्पियों 2:5-8)।

दूसरा पारगमन मनुष्य से परमेश्वर की ओर परिवर्तन था। उसके मनुष्य होने से उसके परमेश्वर होने पर पर्दा पड़ गया था। परिवर्तन की ''विचित्रता'' में ही, अन्त में थोमा उस पर्दे में से जो उठाया जा रहा था, उसे देख पाया था। उसने प्रभु से यह कहते हुए बात की थी, ''हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर'' (यूहन्ना 20:28)। आप कह सकते हैं, कि यह तो एक ही व्यक्ति का अंगीकार था। यह सत्य है, परन्तु मनुष्य जाति को परमेश्वर के अपने प्रकाशन में, यह अंगीकार ऐतिहासिक निर्णायक, उस प्रकाशन को मानने और उसके महत्व का अंगीकार करने की मनुष्य की योग्यता में एक मोड़ है।

स्वर्गारोहण के समय यह पारगमन सम्पूर्ण हो गया था। यीशु केवल एक दिन में ही अलोप नहीं हुआ था, जिसके बाद उसने दोबारा कभी जीवित दिखाई नहीं देना था। अपने प्रेरितों के साथ बात करते-करते, ''वह उन के देखते ही देखते ऊपर उठा लिया गया; और बादल ने उसे उनकी आंखों से छिपा लिया'' (प्रेरितों 1:9)। इस प्रकार मनुष्यता से परमेश्वर में उसका परिवर्तन पूर्ण हो गया था।

निश्चय ही ये दो अविश्वसनीय पारगमन यह दावा नहीं करते कि यीशु अपने जन्म के समय परमेश्वर से थोड़ा कम और मनुष्य से थोड़ा अधिक हो गया था या वह मृत्यु के समय

मनुष्य कम और परमेश्वर अधिक बन गया था। हमने केवल प्रत्येक पारगमन में स्पष्ट दिखाई देने वाले प्रदर्शन का ही विश्लेषण किया है। जो हमने सीखा है वह यह है कि मसीह यीशु में परमेश्वर का छुटकारे का काम इतना सरल नहीं है कि अपने आप समझ आ जाए। परन्तु, एक बार समझ आने के बाद परमेश्वर के प्रेम, दया और अनुग्रह की इसकी झलक हमें विश्वास, प्रेम, कृत्तज्ञता और सेवा में अपने जीवन उसे सौंपने के लिए मजबूर कर देती है।

इसी प्रकार, बाइबल में मिलने वाले भजनों के रूप में घोषणाओं को जिन्हें कई बार ''देहधारी होने के गीत'' कहा जाता है, एक उपयुक्त विषय है जिससे हम ''परमेश्वर पुत्र'' के अपने अध्ययन को समाप्त करते हैं:

> और इस में संदेह नहीं, कि भक्ति का भेद गम्भीर है; अर्थात वह जो शरीर में प्रगट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया (1 तीमुथियुस 3:16)।

पाद टिप्पणियां

[1]लूका 1:34, 35; 2:33, 34, 41, 42, 48; 3:23; मत्ती 13:55, 56; यूहन्ना 6:42.